प्रस्तावना :-

गुलाबी गैंग एक ऐसा संगठन है जिसकी पहचान सशक्तिकरण के रूप में है। किसी भी संगठन की पहचान उससे कार्यों से होती है। जिसमें समाज को मजबूती प्रदान होती है उसके कार्यों में जिसमें समाज की गतिविधियों से प्रभावित समुदाय के लोग होते है जिनमें समाज को बनाए रखने का मद्द बना रहता है। जब कभी समाज अपने पर किए जा रहे अनेकों प्रकार के अत्याचारों का सामना करना पड़ता है तो इस प्रकार के संगठन एक नये विकल्प के रूप में सामने आते हैं। समाज मुख्यत: लोगो के संगठन से ही निर्मित हो सकता है। विद्वानों ने समाज के बारे में कहा है कि 'दो या दो से अधिक व्यक्ति के समूह को समाज कहा जाता है । ' समाज में अनेकों परिवर्तन जो आधुनिकता ने एक ऐसी प्रक्रिया की जिसमें छोटे से छोटा गाँव भी भूमंडलीय प्रक्रियाओं से प्रभावित हुआ। सामाजिक मानवविज्ञान द्वारा सरल व निरक्षर समाजों पर किए गए परंपरागत अध्ययन का प्रभाव मानवविज्ञान की विषय वस्तु और विषय सामग्री पर पड़ा। सामाजिक मानवविज्ञान की प्रवृति समाज (सरल समाज) के सभी पक्षों का एक समग्र में अध्ययन करने की होती थी। अभी तक जो विशेषज्ञता प्राप्त हुई है वह क्षेत्र पर आधारित थी। इसको आगे बढ़ते हुए इसी प्रकार क्षेत्रिय कार्य मानवविज्ञान में एक आवश्यक अंग होता है जिससे क्षेत्र कार्य का चयन, उत्तर-प्रदेश के चित्रकूट जिले के बरगढ़ गाँव का चुनाव किया जिसमें गुलाबी गैंग का प्रभाव दिखाई देता है। इस ग्राम में कोल अनुसूचितजाति निवास करती है जो गुलाबी गैंग से जुड़ी हुई है।

शोधकर्ता के मन में बहुत समय से यह जानने की जिज्ञासा बनी हुई थी कि किसी ग्राम में बदलाव किस प्रकार से होता है जिसमें उसके आर्थिक क्रियाकलापों में परिवर्तन और उनमें से शिक्षा और सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका किस प्रकार की होती है। और उससे ग्राम समाज

में परिवर्तन, जो कि अपने पुराने ऐतिहासिक पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों को काफी हद तक परिवर्तित कर के आधुनिकता के रंग में रंगते हुए मुख्य धारा से जुड़ गयी हो, परिवर्तन के प्रभाव के बारे में जानने की प्रबल इच्छा ने गुलाबी गैंग के प्रभाव गाँव में निवास करने वाले लोगों की जीवन शैली के साथ परिवर्तन की प्रक्रिया को जानने के लिए प्रोत्साहन किया।

समुदाय और संगठन को जो समाज को संगठित करते है जिससे समाज का निर्माण होता है। इससे गुलाबी गैंग भी अछूता नहीं है ये ऐसा संगठन है जिसमें महिलाओं के प्रति हो रहे अत्याचारों और कभी-कभी पुरुष भी प्रताड़ित होता है इन दोनों के बीच में समन्वय बनाने का प्रयत्न किया है। अपने शोध कार्य के दौरान बरगढ़ गाँव में समझने का प्रयास किया है कि किस प्रकार से गाँव कि प्रगति हुई और उसमें परिवर्तन हो रहे है।

इस लघु शोध प्रबंध में इन्ही सवालों को देखने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध **गुलाबी गैंग और सामाजिक परिवर्तन** : (बरगढ़ ग्राम के विशेष संदर्भ में) जिसको आठ अध्यायों में विभाजित किया है। पहले अध्याय में साहित्य पुनरावलोकन, उद्देश्य का महत्व, दूसरा अध्याय शोध प्रविधियाँ जिनका शोध कार्य के उपयोग किया गया है। तीसरे अध्याय में क्षेत्र परिचय का वर्णन किया गया जिसमें उसकी भौगोलिक क्षेत्र, और प्राकृतिक वर्णन जिसमें से प्राप्त तथ्यों का प्रस्तुतिकरण शामिल किया गया है। उनकी वर्तमान स्थिति को दर्शाते हुये क्षेत्र की भौगोलिक स्थितियों को बताता है। जिसमें की अध्याय चौथे में गुलाबी गैंग : उद्भव कालीन स्थितियाँ को तीन उपगमों में विभक्त किया है, जिसमें उसकी कार्य प्रणाली और राज्य स्तरीय संघर्ष इन सभी के अंतर्गत मुख्य तौर पर विभिन्न रूप से बदलते समीकरण और उन सभी से प्रभावित इसके उद्भव की उत्पति से संबंधी है। जिसमें उसके हो रही गतिविधियों से केस अध्ययन को भी देखा गया है। अब हम सामाजिक परिवर्तन जो हमारा विषय के मूल्य

स्तम्भ है पांचवे अध्याय में शैक्षणिक गतिशीलता को जो गाँव में परिघटित हो रही है। जिससे गाँव के लोग अब जागरूक हो रहे है। उसको, छठे अध्याय, में आर्थिक क्षेत्र में उसके योगदान की चर्चा की गई है। जो उनकी वर्तमान स्थिति को दर्शाते है इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए, अध्याय सातवे में राजनैतिक स्थिति और उसमें लोगों की भागेदारी अपने जब प्रतिनिधित्व को चुनने की स्वतंत्रता जिसमें उनकी भागेदारी महत्व पूर्ण होती है। आठवे अध्याय, में सामाजिक स्थिति और उसकी परिदृष्ट जिसमें इस सभी में गुलाबी गैंग के प्रभाव को देखने का प्रयास किया गया है। अंतिम अध्याय में 'उपसंहार' के अंतर्गत गुलाबी गैंग के अथक प्रयास से ग्राम में आए परिवर्तन से इसको आगे बढ़ावा देने जिसको संदर्भ ग्रंथ सूची और परिशिष्ट को संग्लन किया है